

॥ अथ विष इम्रत को अंग ॥

मारवाडी + मराठी



महत्वाची सुचना:- रामद्वारा जळगांव यांचे असे निदर्शनास आले आहे की,काही रामस्नेही शेठ साहेब राधाकिसनजी महाराज व जे.टी.चांडक यांनी अर्थ केलेल्या वाणीजी रामद्वारा जळगांव मधून घेऊन जातात व आपल्या वाणीजीचा गुरु महाराज सांगतात तसा पुर्ण आधार न घेता आपल्या मताने समजने,अर्थांमध्ये परस्पर बदल करुन टाकतात तरी वाणीजी घेऊन गेलेल्या कोणत्याही संताने परस्पर अर्थांमध्ये बदल करु नये.काहीही बदल करायचा वाटत असल्यास रामद्वारा जळगांवशी संपर्क साधावा व नंतर बदल करावा.

* वाणीजी आमच्याकडून जशी पाहिजे तशी चेक झालेली नाही,चेक करायला भरपूर वेळ लागतो.आम्ही परत चेक करुन पुन्हा लोड करुन देऊ.याला वर्षभर तरी लागेल. तुमच्या समजण्यापुरता कामात येईल,यासाठी आम्ही वाणीजी वाचण्याकरीता लोड करुन दिली आहे.

राम ॥ राम नाम लो, भाग जगाओ ॥

॥ राम नाम लो, भाग जगाओ ॥

राम

राम ॥ अथ विष इम्रत को अंग लिखंते ॥

॥ कुण्डल्या ॥

राम झूठो अन केसो हुवो ॥ सो बिध कहिये मोय ॥

राम कोण कोहो ओगण मुख मे ॥ सो गुण कहिये जोय ॥

राम सो गुण कहीये जोय ॥ काँय आ अेब लगाई ॥

राम कहो ग्यान सुण ब्यास ॥ अरथ सागे मुज लाई ॥

राम सुखराम कहे ईम्रत तको ॥ सो तो मुख में होय ॥

राम झूठो अन केसो हुवो ॥ सो बिध कहीये मोय ॥१॥

राम उष्टे अन्न कसे असते?ती विधी मला सांगा.मुखात काय अवगुण व गुण आहे ते पाहून

राम सांगा.हा दोष काय लावला आहे?याचा खरा अर्थ सांगा आणि ते ज्ञान सांगा,जी कथा

राम व्यासजी कडून ऐकली आहे.आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सांगतात की,जे अमृत

राम आहे ते तर मुखात आहे.॥१॥

राम मुख सूं थुथकी न्हाकियां ॥ निजर को गुण जाय ॥

राम सिध सुण देवे आसका ॥ सोई फळ ऊपजे मांय ॥

राम सोई फळ ऊपजे मांय ॥ सरब के गुण मुख माई ॥

राम जमी सरप अर जोख ॥ के कवी चिडी कहाई ॥

राम सुखराम कहे ग्यानी सुणो ॥ करता सो मुख मांय ॥

राम तुम झुठो अन व्हेत हो ॥ सो किण गुण को हो आय ॥२॥

राम मुखाने थुंकी टकली तर नजर लागली असेल तर मिटून जाते.सिध्द आपल्या मुखाने

राम जे सांगतात ते फळ मिळून जाते.सर्वांचे गुण मुखातच आहे.जमीनीवर साप राहतो आणि

राम जळू पाण्यात राहते.जळूच्या मुखात असा गुण आहे की,शरीरात जेथे वेदना होतात,

राम तेथे लावल्याने वेदनेला खेचून घेते.श्यामा चिमणी आपल्या मुखाने बोलून शुभ अशुभ

राम सांगून देते.याकरीता आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सांगतात की,हे ज्ञानीनो ऐका,

राम कर्त्याचे नाव म्हणजे राम नाम ही मुखाने घेतात म्हणजे मुखात इतके गुण आहे आणि

राम आपण अन्नाला उष्टे म्हणतात,तर कोणत्या मुखाने म्हणत आहे.॥२॥

राम झूटे झूटे तूम केत हो ॥ मुख मे झूट न होय ॥

राम गुण ओगुण दोनू खरा ॥ तामे फेर न कोय ॥

राम ता मे फेर न कोय ॥ बिष सोई हे मुख माई ॥

राम इम्रत भन्यो अपार ॥ परख बिन जाणे नाही ॥

राम सुखराम कहे मुख सार हे ॥ सब चीजां को जोय ॥

राम झूट झूट तूम केत हो ॥ मुख मे झूट न होय ॥३॥

राम

| | | | |
|-----|---|--------------------------|-----|
| राम | ॥ राम नाम लो, भाग जगाओ ॥ | ॥ राम नाम लो, भाग जगाओ ॥ | राम |
| राम | मुखात खोटे आहे, खोटे आहे, असे म्हणतात, तर मुखात काही खोटे नाही. मुखात अवगुण | | राम |
| राम | व गुण दोन्ही आहे, यात कोणत्या तऱ्हेचा फरक नाही. ज्याला विष म्हणतात, ते ही मुखातच | | राम |
| राम | आहे, अमृत ही अपार मुखात भरलेले आहे, त्याला परखल्या शिवाय जाणत नाही. आदि | | राम |
| राम | सतगुरु सुखरामजी महाराज सांगतात की, सर्व वस्तुंचा सार मुखात आहे. ॥३॥ | | राम |
| राम | ग्यानी ध्यानी सब सुणो ॥ मुख मे ओगुण होय ॥ | | राम |
| राम | मारकंड अमर भया ॥ प्रसादी बळ जोय ॥ | | राम |
| राम | परसादी बळ जोय ॥ नवळ कंचन अंग जोई ॥ | | राम |
| राम | दादू झेलर पीक ॥ ब्रम्ह पायो कहूँ तोई ॥ | | राम |
| राम | सुखराम कहे बिप्र भया ॥ हर मुख सूं के तोय ॥ | | राम |
| राम | ग्याणी ध्यानी सब सुणो ॥ मुख मे झूट न होय ॥४॥ | | राम |
| राम | ज्ञानी, ध्यानी सर्व ऐका, मुखात हा गुण आहे, प्रसादाच्या बळाने मार्कंडेय मुनी अमर | | राम |
| राम | होऊन गेले. मुंगुसाचे शरीर पांडवांच्या यज्ञात सोन्याचे होऊन गेले. दादू महाराजांनी आपल्या | | राम |
| राम | गुरुच्या मुखातून पीचकारी झेलून सतस्वरूप ब्रम्हची प्राप्ती केली. आदि सतगुरु सुखरामजी | | राम |
| राम | महाराज सांगतात की, ब्राम्हणांची उत्पत्ती ब्रम्हाच्या मुखाने झाली आहे. ॥४॥ | | राम |
| राम | झूट झूट भोळा कहे ॥ मुख मे झूट न होय ॥ | | राम |
| राम | किणियक मुख ईप्रत बसे ॥ कांही एक बिष कहूं तोय ॥ | | राम |
| राम | कांही अेक बिष कहूं तोय ॥ सरब तजीये नही भाई ॥ | | राम |
| राम | किणियक मुख सूं जाण ॥ मुक्त फळ लगे माई ॥ | | राम |
| राम | सुखराम कहे बिचार कर ॥ आड न डारो कोय ॥ | | राम |
| राम | झूट झूट भोळा कहे ॥ मुख मे झूट न होय ॥५॥ | | राम |
| राम | भोळे मनुष्यच मुखात खोटे सांगतात, मुखात खोटे नाही, कित्येकांचा मुखात अमृत राहते, | | राम |
| राम | कोण्या मुखात जहर राहते, सर्वांनाच त्यागले नाही पाहीजे. कोणाच्या मुखातून ज्ञान ऐकून | | राम |
| राम | मोक्षाच्या प्राप्तीचे फळ प्राप्त करुन घेतात. आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सांगतात | | राम |
| राम | की, विचार करुन सांगतो, कोणाच्या आड देऊ नका. ॥५॥ | | राम |
| राम | सब दिन मुख मे ज्हेर नही ॥ सब दिन अमी न होय ॥ | | राम |
| राम | किणी यक पुळ असमान सूं ॥ ईप्रत आवे जोय ॥ | | राम |
| राम | ईप्रत आवे जोय ॥ पेम सूं ऊतरे भाई ॥ | | राम |
| राम | ज्यूं मथन से काम ॥ भग मुख पडियो जाई ॥ | | राम |
| राम | सुखराम दास या प्रख रे ॥ जाणे बिरळा कोय ॥ | | राम |
| राम | सब दिन मुख मे ज्हेर नही ॥ सब दिन अमी न होय ॥६॥ | | राम |
| राम | मुखात प्रत्येक वेळी विष व अमृत राहत नाही. कोण्या कोण्या पळात आकाशातून अमृत | | राम |

राम ॥ राम नाम लो, भाग जगाओ ॥

॥ राम नाम लो, भाग जगाओ ॥

राम

राम उतरते,ते अमृत प्रेमाने उतरते,जसे बिंद मैथुनने भगाच्या मुखात जाऊन पडते.आदि
राम सतगुरु सुखरामजी महाराज सांगतात की,ही परीक्षा विरळेच जाणतात.॥६॥

राम

राम सरप रोस कर खाय रे ॥ तो नर बचे न कोय ॥

राम

राम खिज्याँ सूँ बिष उतरे ॥ ब्रेहमंड सूँ कहुं तोय ॥

राम

राम ब्रेहमंड सूँ कहूँ तोय ॥ रीत इम्रत ईण आवे ॥

राम

राम जिण बिध रीजे संत ॥ सिष सोई बिध लावे ॥

राम

राम सुखराम दास ललफल कियोँ ॥ सिष को काज न होय ॥

राम

राम सरप रोस कर खाय रे ॥ सो नर बचे न कोय ॥७॥

राम

राम साप क्रोध करुन मनुष्याला खातो,तर तो मनुष्य वाचत नाही.क्रोध केल्याने विष

राम

राम ब्रह्मंडातून उतरते.अमृत या रीतीने येते,ज्या विधीने संत प्रसन्न होतात,शिष्याला तेच

राम

राम कार्य केले पाहिजे.त्यांच्या सांगितलेल्या विधीने कार्य नाही करणे व त्रिगुणी मायेच्या

राम

राम विधीने कार्य करणे हे ललफल करणे आहे.ललफल केल्याने परमपद मिळत नाही,अशा

राम

राम प्रकारे शिष्याचे काम होत नाही,असे आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोलले.॥७॥

राम

॥ इति बिष ईम्रत को अंग संपूरण ॥

राम

राम